नवरंगपुर-ओडिशा। झारखण्ड की राज्यपाल महोदया द्रौपदी मुरमू को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नमिता। साथ हैं ब्र.कु. रंजीत।

हाजीपुर-विहार। न्यायाधीश राजीव रौशन को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. आरती। साथ हैं सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अंजली।

समस्तीपुर-विहार। जिला एवं सत्र न्यायाधीश संजय कुमार उपाध्याय को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रानी दीदी।

पारलाखेमुंडी-ओडिशा। विधायक सूर्य नारायण को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु. माला।

मनसा-हरियाणा। अग्रवाल सभा अध्यक्ष अशोक कुमार को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुदेश बहन।

पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

दुनिया में भी यह कहावत प्रचलित है कि कमाया, खाया बस, लेकिन बचाया कितना, इस पर हमारी ग्रोथ या उन्नति मानी जाती है। वही फॉर्मूला यहां भी काम करता है, यहां माना आध्यात्मिकता में, जब हम अपना बचत नहीं कर पाते तो हमें बहुत समय तक ज्ञान सुनने के बाद भी उन्नति फील नहीं होती।

हम सभी हर समय सेवा में अपने को बिज़ी रखते हैं, आप भी रखते होंगे, लेकिन वो सारा समय क्या हमारा सफल होता, या बचत होती? मान लीजिए आठ घंटे तक लगातार हमने सेवा की, लेकिन क्या वे आठ घंटे हमने सेवा की या कहीं थोड़ा थोड़ा वेस्ट भी हुआ या आधा भागदौड़ में, आधा सोचने में गया? उस समय यदि हमने थकावट महसूस की, इसका मतलब सेवा हमने नहीं की, हमने सिर्फ काम किया, उसमें हमारा तो कुछ जमा नहीं हुआ। जब भी हम कोई कर्म करते हैं, यदि उसमें श्रेष्ठ संकल्प, शुभ भावना, शुभ कामना के संकल्प लेते हैं, वही जमा माने जाते हैं, बाकी व्यर्थ ही माना जाता है।

हम जो भी कर्म करते हैं, उस कर्म में हमारे वायब्रेशन्स ज़्यादा काम करते हैं स्थूलता के स्थान पर। हमारी रूहानी सर्विस सिर्फ वायब्रेशन्स के आधार से ही है। जब भी हम कोई कर्म कर रहे हैं, उस कर्म में सबसे ज़्यादा यह देखा जाता है कि उस समय आप कितनी एकाग्रता से वह कर्म कर रहे हैं। सारा संसार इसी भाव से तो यह कहता आ रहा है कि हम सभी कर्मयोगी हैं, लेकिन कर्म करने से थकावट होती है और बार बार उसको औरों पर थोपते रहते हैं। उससे हम खुश तो नहीं हो पा रहे हैं ना! इसलिए किसी चीज़ से खुशी तो हमें तभी प्राप्त होगी ना जब हम उसे वैसे ही करें जैसे कोई काम किया और डिटैच हो गये। इससे हमारा क्रेडिट जमा होता जाता है। आज बस हम दुनिया में कमाते और खाते हैं, लेकिन यदि बचत ना हो, तो भय या घबराहट तो होती है ना। वैसे ही यहां भी आप खुशी, शांति से थोड़ी देर रहे, लेकिन यदि उसे उसी भाव से डिस्ट्रीब्यूट नहीं किया तो वह फिर बढ़ेगा नहीं। इसलिए इन बातों को जब तक हम बढ़ायेंगे नहीं, तब तक आध्यात्मिक जीवन में खुशी का अनुभव नहीं बढ़ेगा। कोई पूछेगा, अच्छा, यहां आने पर क्या सच में खुशी बढ़ जाती है, तो आपका कहना भी यही होगा, हाँ। लेकिन जो व्यक्ति समझता है, हमें तो परमानेंट खुशी बढ़ानी है, इससे अच्छा तो लौकिक कर्म ही अच्छा है जिसमें थोड़ी बहुत तो मिल ही जाती है। इसलिए हमें मन को थोड़ा और चमत्कारिक बनाने के लिए, कुछ नया करना होगा, क्योंकि परमानेंट खुशी के लिए तो आत्मिक स्थिति चाहिए। तभी तो वह कुछ करिश्माई सा लगेगा, जब हमारे पास जमा होगा। लोग कहेंगे ज़रूर यहां कुछ है और आगे आएंगे। अटेंशन प्लीज़।

नई दिल्ली। पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. आशा दीदी।

नई दिल्ली। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जगत प्रकाश नड्डा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सविता।

फतेहपुर-उ.प्र.। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर थाना अधिकारी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारी बहन।

फिरोज़पुर कैंट-पंजाब। सुखविंदर सिंह छीना,आई.जी.पुलिस को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. उषा तथा ब्र.कु. शक्ति।

कोटद्वार-उत्तराखण्ड। स्टेशन मास्टर रामआसरे तथा अन्य रेलवे कर्मचारियों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ज्योति।

सिवान-विहार। सेवाकेन्द्र पर आयोजित राखी कार्यक्रम में स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. कंचन माला को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुधा।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-24 (2017-2018)

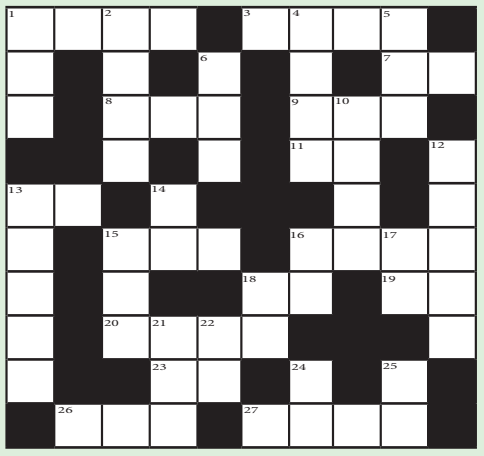

ऊपर से नीचे

1. बच्चा, ...सो मालिक बनना है (3)
2. अभी तुम्हारी.... अवस्था है इसीलिए किसी से मोह नहीं रखना है (4)
4. सर्पराज, मान्यता अनुसार अपने फन पर पृथ्वी को रखा (4)
5. देखना, अवलोकित करना (3)
6. एक वैरागी राजा, व देही (3)
10. करिश्मा, जादूगरी (4)
12. प्रभावशाली, गुणकारी (5)
13. बाबा ने आकर हम बच्चों को...दी है, शरण में लेना (5)
14. रहस्य, राज्य (2)
15. तपस्या, सिद्धि, आराधना (3)
16. ताकत, सांस (2)
17. कौआ, काक (2)
18. सूक्ष्म अंश, दाना (2)
21. मदद, बचाव,आराम (3)
22. मृत्यु के देवता, यमराज (2)
24. मूल्य, कीमत (2)
25. विशेषता, कला (2)

बायें से दायें

1. हमारा बाबा... है, माली (4)
3. गुण, कला, योग्यता (4)
7. कहानी, किस्सा (2)
8. मुख्य, प्रमुख (3)
9. नृत्य करना, उछलना, कूदना (3)
11. दुःख,तकलीफ, सदमा (2)
13. हया, लाज (2)
15. शिव...आया है अपनी सजनियों को साथ ले जाने (3)
16. ज़रूरत, आवश्यकता (4)
18. अल्प, थोड़ा (2)
19. विष्णु जी का चारों अस्त्रों में से एक (2)
20. नर से...बनना है, विष्णु (4)
23. ...उड़ के चले जायेंगे (2)
26. दर्जा, कक्षा, समुदाय (3)
27. सफलता, उद्देश्य की सिद्धि (4)

- ब्र.कु. राजेश,शांतिवन।